मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 11

नवंबर 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

रायपुर में कार्यशाला का आयोजन	2
पुस्तकें इन्सान को अच्छा इन्सान बनाती हैं	3
पर्यावरण एवं बाल प्रकाशन	3
न्यास मुख्यालय में हिंदी सलाहकार समिति की उप-समिति की बैठक	3
बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	4
पूर्वोत्तर के इतिहास पर गोष्ठी आयोजित	4
चीन एवं भारत के बीच समझौता-ज्ञापन	4
फैजाबाद पुस्तक मेला में रा.पु. न्यास को प्रथम पुरस्कार	5
कोटि पुस्तक प्रदर्शनी	5
पुस्तक परिचय	6
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	7
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले	8

नवीनतम प्रकाशन

1971 : बांग्लादेश मुक्तियुद्ध की कहानियाँ

संपा. : सलाम आजाद

पृ. 224 ₹ 190

ISBN 978-81-237-7313-1

फ्रैंकफुर्त पुस्तक मेला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पिछले 40 वर्षों से फ्रैंकफुर्त पुस्तक मेले में सक्रिय रूप से भागीदारी करता आ रहा है। इस वर्ष एनबीटी ने साहित्य अकादेमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय तथा प्रकाशन विभाग जैसे सरकारी संगठनों के साथ मिलकर मेले में सामूहिक रूप से भागीदारी की। मेले में इन संगठनों का प्रतिनिधित्व 10 अधिकारियों के एक प्रतिनिधिमंडल द्वारा किया गया।

8 अक्तूबर, 2014 को फ्रैंकफुर्त में महावाणिज्य दूतावास, श्री रवीश कुमार द्वारा मेले का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह के अंतर्गत, श्री रवीश कुमार के साथ मेले में भारतीय मंडप से संबंधित चर्चा की गई जिसमें उन्होंने यह विश्वास जताया कि महावाणिज्य दूतावास का कार्यालय मेले में भारत व भारतीय प्रकाशनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एनबीटी का सहयोग करता रहेगा। उन्होंने आशा प्रकट की कि आगामी वर्षों में एनबीटी मेले में एक बड़े प्रतिनिधित्व के साथ भाग लेगा। फ्रैंकफुर्त पुस्तक मेले के दौरान प्रकाशन विभाग, साहित्य अकादेमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास सहित अनेक भारतीय प्रकाशकों के लगभग 300 प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगाई गई।

मेले में 'भारतीय प्रकाशन' आगंतुकों के आकर्षण का केंद्र रहा। भारतीय मंडप पर अनेक बैठकें आयोजित की गईं जिनमें प्रतिलिप्यधिकार-विनिमय, नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2015 एवं अन्य मुद्दे शामिल थे। पिछले वर्षों की भाँति ही पुस्तक-प्रेमियों द्वारा भारतीय मंडप को विशेष महत्व मिला एवं यहाँ से ले जाई गई पुस्तकों में आगंतुकों ने पर्याप्त रुचि दिखाई।

मेले में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से डॉ. सुरेश चंद; राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से श्री देबू सरकार, श्री राजीव चौधरी; साहित्य अकादेमी की ओर से डॉ. के.एस. राव व श्रीमती रेणु मोहन भान तथा प्रकाशन विभाग की ओर से श्रीमती साधना रॉत, श्रीमती निधि पांडे, श्रीमती रौली महिंद्रा वर्मा व श्री ए.के. पॉल तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से श्री डी.एस. बिष्ट ने प्रतिनिधित्व किया।

रायपुर में कार्यशाला का आयोजन

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत एवं राज्य संसाधन केंद्र, रायपुर, छत्तीसगढ़ के तत्वावधान में नवसाक्षरों के लिए बेहतर पठन सामग्री तैयार करने हेतु एक तीन दिवसीय कार्यशाला का 16 से 18 सितंबर, 2014 तक आयोजन किया गया। शहर से लगभग पचास किलोमीटर दूर चंपारण में आयोजित इस कार्यशाला में राज्य के तकरीबन बीस रचनाकारों ने हिस्सेदारी की।

कार्यशाला का उद्घाटन वरिष्ठ पत्रकार व प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ललित सुरजन ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में सहायक संपादक (हिंदी) व छत्तीसगढ़ राज्य के समन्वयक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने की।

कार्यक्रम में संदर्भ व्यक्ति के तौर पर आमंत्रित थे, दिल्ली से कथाकार डॉ. अमरेंद्र मिश्र व छत्तीसगढ़ से श्री सतीश जायसवाल। इस अवसर पर राज्य संसाधन केंद्र के निदेशक श्री तुहिन देव एवं राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण के सहायक संचालक प्रशांत पांडेय और दिनेश टांक भी मौजूद थे।

मुख्य अतिथि ललित सुरजन ने कहा–आप सब रचनात्मक लेखन से जुड़े हुए हैं, परंतु नवसाक्षरों के लिए लिखना आसान नहीं है। उन्होंने विश्व साहित्य की चर्चा करते हुए कहा कि जिस तरह बड़ों के लिए साहित्य की रचना की जाती है उसी तरह नवसाक्षरों के लिए भी रचा जाता है। हम प्रौढ़ों के लिए साहित्य की रचना करने जा रहे हैं, हमें उनकी जीवन शैली तथा सामाजिक सरोकारों से भली-भाँति परिचित होना है, हमें उनके मनोविज्ञान को समझना होगा, उनके लिए रोचक विषयों पर आधारित किताबों को तैयार करना होगा, यह चुनौती है हमारे सामने जिस पर रचनाकारों को विजय हासिल करनी है। डॉ. ललित मंडोरा ने कहा–न्यास विगत अनेक वर्षों से कार्यशाला करता आया है जिसके बेहतर परिणाम मिले हैं। रचनाकारों को पता चलता है कि लिखना इतना आसान नहीं जितना आसान मान लिया गया है, बल्कि तैयार की गई रचनाओं के असली पाठक हमारे नवसाक्षर हैं जो क्षेत्र परीक्षण के समय पांडुलिपि की गुणवत्ता पर अपने विचार देते हैं।

संदर्भ व्यक्ति श्री सतीश जायसवाल ने कहा–हम साक्षर लोगों की जिम्मेवारी बनती है कि समाज में फैले निरक्षर लोगों को साक्षर बनाएँ। उन्होंने साथ-साथ नवसाक्षरों के बीच वाचनालय एवं पुस्तक वाचन की संस्कृति को बढ़ावा देने हेतु व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने की बात पर भी जोर दिया। वहीं, दूसरी ओर दिल्ली से गए कहानीकार डॉ. अमरेंद्र मिश्र ने कहा–"रचनाओं में ऊर्जा होनी चाहिए जो आकर्षित कर सके। अच्छे लेखन के साहित्य का ज्यादा-से-ज्यादा अध्ययन भी जरूरी है। सभी रचनाकारों को अपने रचे हुए का मूल्यांकन भी स्वयं करना होगा और इस मामले में कठोर बनना भी उतना ही जरूरी है।" राज्य साक्षरता मिशन की ओर से आर्थिक साक्षरता, विधिक साक्षरता, आपदा प्रबंधन, चुनावी साक्षरता आदि विषयों पर ध्यान दिलाया गया।

कार्यशाला का पहला दिन रोचक रहा। सब रचनाकारों से निर्धारित विषयों पर बातचीत हुई। उसी दिन विषयों पर लंबी चर्चा के बाद सबने लिखना शुरू किया। शाम के सत्र में तैयार रचनाओं पर चर्चा हुई, रचनाकारों को अपनी गलतियों का एहसास हुआ और नवसाक्षरों की जरूरतें रचनाकारों को बतलाई गईं। कहानियों को दूसरे दिन फिर चर्चा सत्र के तहत चुस्त बनाया गया। यह अवसर सबके लिए अनोखा था। अधिकांश रचनाकारों का भ्रम दूर हो गया था जब उन्होंने न्यास और राज्य संसाधन केंद्र की पहले से तैयार पुस्तकों का अवलोकन किया।

तीसरे दिन गाँव खोला जो कि चंपारण से पैंतीस किलोमीटर दूर है, वहाँ आदर्श शिक्षा केंद्र में नवसाक्षर महिलाओं और पुरुषों को आमंत्रित किया गया था। सभी ने पहले मेहमानों का स्वागत एक ओजस्वी गीत से किया। तदुपरांत, रचनाकारों के समूह बना दिये गए, फिर हुई असली परीक्षा। रचनाकारों के चेहरे पर संतोष और पढ़ने की ललक साफ दिख रही थी। उनके लिए जरूरी विषयों पर कहानियाँ तैयार हो गई थीं। बहुभाषाविद् राज्य संसाधन केंद्र निदेशक श्री तुहिन ने छत्तीसगढ़ी में गीत भी सुनाया। कार्यशाला के अंतिम दिन सभी रचनाकारों ने अपने-अपने अनुभव साझा किए। दोनों संस्थाओं की ओर से उन्हें श्रीमती लक्ष्मी वर्मा, अध्यक्ष जिला पंचायत समिति व साक्षरता अभियान के हाथों प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किये गए। इस तीन दिवसीय कार्यशाला में बीस कहानियाँ रची गईं। न्यास आगे भी इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन करता रहेगा ताकि रचनाकारों की तलाश भी हो सके और रचनाएँ भी तैयार की जा सकें।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : ₹ 100.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

पुस्तकें इन्सान को अच्छा इन्सान बनाती हैं

''बच्चों के लिए लिखना बेहद कठिन होता है। यह सुखद है कि श्री आबिद सुरती पिछली सदी में भी यह कार्य करते थे और आज भी। सूचना के विस्फोट के इस दौर में आवश्यक है कि हम अपने परिवेश के अनुरूप बच्चों के लिए अपने चरित्र बनाएँ। आबिद सुरती की पुस्तकें बच्चों को खेल-खेल में बहुत कुछ सिखा जाती हैं।'' उक्त उद्‌गार थे प्रख्यात पत्रकार एवं संपादक श्री विश्वनाथ सचदेवा के, जो राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित आबिद सुरती की तीन पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। यह आयोजन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत तथा ड्राप डेड संस्था के संयुक्त तत्वावधान में मुंबई के प्रेस क्लब में संपन्न हुआ, जिसमें विशिष्ट अतिथि जाने-माने निर्देशक श्री महेश वी पाटिल और बच्चों की पत्रिका 'टिंकल' के संपादक श्री प्रियंवदा रस्तोगी थे। लोकार्पित पुस्तकें हैं–*डॉ. चींचू के कारनामे भाग-1* और *भाग-2* तथा *बोल बुद्धू।*

इस आयोजन का प्रारंभ बच्चों के लिए कार्यशाला का आयोजन करने वाली सुश्री शिवानी टिबरेवाल के संबोधन से हुआ। उनका मानना था कि हमें बच्चों को छूट देनी चाहिए ताकि वे अपने आपको ठीक से व्यक्त कर सकें, बनिस्पत इसके कि हम उन्हें कुछ सिखाएँ। श्री महेश वी. पाटिल ने लोगों के हँसने और खुश रहने की अनिवार्यता पर जोर देते हुए कहा कि आज ऐसी सामग्री बहुत कम उपलब्ध है जो लोगों को हँसने का अवसर दे। आबिद सुरती के लेखन एवं चित्र इस कसौटी पर बहुत खरे उतरते हैं। प्रियंवदा रस्तोगी का कहना था कि बच्चों का असली शिक्षण स्कूल की कक्षा और ब्लैकबोर्ड से बाहर निकलकर होना चाहिए। उनका कहना था कि बच्चे कॉमिक्स से बेहतर तरीके से सीखते हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार श्री अक्षय जैन ने श्री आबिद सुरती को गुजराती का भी महत्वपूर्ण साहित्यकार बताते हुए कहा कि वे उन विरले लेखकों में से हैं जो जनता के सरोकारों को लेकर सड़क पर भी आते हैं। लोकार्पित पुस्तकों के लेखक और चित्रकार आबिद सुरती ने बताया कि किस तरीके से उनका बचपन फुटपाथ पर बीता और सन् 1942 के द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान आने वाले सैनिकों से उन्हें मिकी माउस कार्टून के कुछ पन्ने मिले। उन्होंने पहली बार उन्हीं चरित्रों को कागज पर बनाया और वहीं से उनकी चित्र बनाने की यात्रा शुरू हुई। आबिद सुरती ने अपने जीवन के कई अनछुए पहलू भी उद्‌घाटित किए।

इस आयोजन में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में हिंदी भाषा के सहायक संपादक, श्री पंकज चतुर्वेदी ने न्यास की विभिन्न गतिविधियों तथा हमारी बच्चों की पुस्तकों की गुणवत्ता के मापदंड की जानकारी दी। आयोजन के दौरान न्यास के पश्चिम क्षेत्रीय कार्यालय की प्रभारी सुश्री उषा नैयर भी उपस्थित थीं। इस आयोजन में मुंबई के कई फिल्मी कलाकार, संपादक, लेखक और अनुवादक शामिल हुए।

पर्यावरण एवं बाल प्रकाशन

27 अगस्त, 2014 को टेरी प्रेस, ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान, प्रकाशन विंग द्वारा 'ह्वाई शुड आई रीसाइकिल?' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक बच्चों को रीसाइकिल करने, संसाधनों का पुनः प्रयोग करने के सिद्धांतों को समझाने में सहायता प्रदान करेगी व साथ ही, यह भी बताएगी कि किस प्रकार ये सिद्धांत विश्व को एक स्वच्छ, स्वस्थ एवं रहने के लिए उत्तम स्थान बना सकते हैं।

पुस्तक-लोकार्पण कार्यक्रम से पूर्व एक पैनल चर्चा आयोजित की गई जिसमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर; मॉडर्न स्कूल की पूर्व प्रधानाचार्या, सुश्री लता वैद्यनाथन; लेखक एवं ग्राफीय उपन्यासकार, विश्वज्योति घोष व टेरी से सुश्री लिवलीन ने भाग लिया।

यहाँ आयोजित चर्चा में विभिन्न मुद्‌दों जैसे बच्चों के लिए पर्यावरण साहित्य का अभाव, बच्चों हेतु पर्यावरण संबंधी विषयों पर आधारित रोचक पुस्तकों का निर्माण, पर्यावरण एवं बाल-साहित्य पर राष्ट्रीय नीति परिप्रेक्ष्य, पर्यावरण शिक्षा एवं इसमें विद्यालयों की भूमिका आदि पर चर्चा की गई।

पुस्तक लोकार्पण के अवसर पर टेरी के निदेशक, श्री प्रबीर सेनगुप्ता ने कहा, ''क्या स्थायी है और क्या नहीं, क्या नैतिक है और क्या नहीं यह केवल पुस्तकों के माध्यम से ही सिखाया जा सकता है।'' एनबीटी के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने कहा, ''बच्चों में छोटी उम्र से ही पढ़ने की आदत का विकास करने की आवश्यकता है।'' उन्होंने कहा कि 'छोटे शहरों एवं गैर-मेट्रो क्षेत्रों में पुस्तक प्रोन्नयन की अत्यंत आवश्यकता है जहाँ पाठकों में क्षेत्रीय भाषा के प्रति रुचि एवं लगाव अधिक है।' उन्होंने बच्चों की पुस्तकों में पर्यावरण संबंधी विषयों की आवश्यकता पर भी बल दिया।

न्यास मुख्यालय में हिंदी सलाहकार समिति की उप-समिति की बैठक

दि. 27 अक्तूबर, 2014 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के दिल्ली स्थित मुख्यालय में हिंदी सलाहकार समिति की उप-समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में उप-समिति के तीन सदस्य उपस्थित हुए। ये थे–प्रो. रामबक्ष, प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल एवं श्रीमती चित्रा मुद्‌गल। बैठक की अध्यक्षता न्यास-निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर ने की। बैठक में संपादकीय विभाग, हिंदी विभाग से श्रीमती उमा बंसल (संपादक), श्री पंकज चतुर्वेदी (सहायक संपादक), श्री दीपक कुमार गुप्ता एवं श्रीमती कमलेश कुमारी (संपादकीय सहायक) उपस्थित थे। बैठक में अनेक प्रस्तावों पर चर्चा हुई।

बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

21वाँ बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 27 से 31 अगस्त, 2014 के दौरान चाइना इंटरनेशनल एक्जिबिशन सेंटर, बीजिंग में आयोजित किया गया। यह पुस्तक मेला 53,000 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ था, जिसमें सामान्य प्रकाशन कोना, बाल पुस्तकें, कार्टून व एनीमेशन कोना, पत्र-पत्रिकाओं का विशिष्ट कोना, पाठकों की माँग पर निर्मित प्रकाशन कोना, प्रतिलिप्यधिकार कोना व पुस्तकालय अधिग्रहण कोना आदि मुख्य आकर्षण शामिल थे।

बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला विश्व-भर की उत्तम पुस्तकों का चीन में परिचय करवाने व चीन की प्रसिद्ध पुस्तकों को विश्व-भर में ले जाने के सिद्धांत को बखूबी कायम रखे हुए है। यह पुस्तक मेला प्रतिलिप्यधिकार व्यापार, पुस्तक व्यापार, सांस्कृतिक गतिविधियों, प्रदर्शनों, परामर्श सेवाओं एवं व्यापारिक नेटवर्किंग आदि को शामिल कर एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन समारोह का रूप लेता जा रहा है। पिछले 20 वर्षों से यह पुस्तक मेला प्रकाशकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र बन गया है जहाँ घरेलू एवं विदेशी पुस्तक-प्रकाशन उद्योग भागीदारी कर अपना सहयोग प्रदान करता है।

भारतीय प्रकाशनों के प्रतिनिधि के रूप में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला-2014 में भाग लिया व हॉल सं. ई-2 में हिंदी व अँग्रेजी भाषा में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई। मेले में लगे एनबीटी स्टॉल पर विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों, प्रकाशकों व पुस्तक-प्रेमियों ने शिरकत की। इस वर्ष मेले में सम्मानित देश का दर्जा तुर्की गणराज्य को दिया गया।

पूर्वोत्तर के इतिहास पर गोष्ठी आयोजित

पूर्वोत्तर अध्ययन एवं नीति अनुसंधान केंद्र, जामिया मिल्लिया, नई दिल्ली व हिल यूनिवर्सिटी (नेहू), शिलांग के सहयोग से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा आईसीएसएसआर, एनईआरसी, नेहू, शिलांग में 27 एवं 28 अगस्त, 2014 को दो दिवसीय गोष्ठी आयोजित की गई।

इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए विद्वानों व इतिहासकारों ने पूर्वोत्तर के इतिहास से संबंधित विषयों पर चर्चा की। इन्होंने दशकों से पूर्वोत्तर में विद्यमान ज्ञान की खाई से उत्पन्न हुई भ्रांतियों तथा मिथ्याबोध पर भी चिंता जताई। गोष्ठी में पूर्वोत्तर क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विश्वविद्यालयों में मौजूदा साहित्य एवं पाठ्यक्रम पर भी समीक्षा की

गई। पूर्वोत्तर के इतिहास व इससे संबंधित विभिन्न दृष्टिकोणों की उपेक्षा दशकों से होती आ रही है। इस गोष्ठी का उद्देश्य 'पूर्वोत्तर इतिहास की भूमिका' तैयार करना है जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तत्वावधान में केंद्रीय विश्वविद्यालयों से प्रारंभ करते हुए देश-भर के विश्वविद्यालयों में बुनियादी पाठ्यक्रम के रूप में प्रयोग में लाया जाए।

गोष्ठी के अंत में यह निर्णय लिया गया कि इस कार्य की प्रगति हेतु भविष्य में ऐसी बैठकें पूर्वोत्तर क्षेत्रों एवं दिल्ली में आयोजित की जाएँगी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का प्रतिनिधित्व, संयुक्त सचिव, डॉ. मोहम्मद आरिफ द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से असमिया भाषा के संपादक श्री दीप सैकिया व अँग्रेजी भाषा की संपादकीय सहायक, सुश्री केरोलिन पाओ द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया।

चीन एवं भारत के बीच समझौता-ज्ञापन

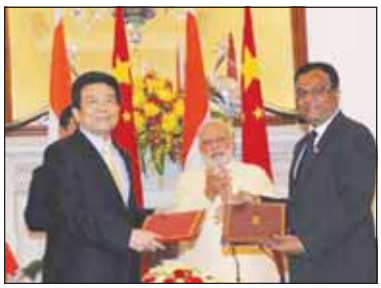

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत मानव, संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित किए जाने वाले नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 2016 में चीन विशिष्ट अतिथि देश होगा। इस संबंध में दिनांक 18 सितंबर, 2014 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी तथा चीन के माननीय राष्ट्रपति, श्री शी जिनपिंग की उपस्थिति में हैदराबाद हाउस, नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के निदेशक, डॉ. एम.ए. सिकंदर तथा चीन जनवादी गणराज्य के प्रेस, प्रकाशन, रेडियो, फिल्म तथा टेलीविजन राज्य प्रशासन (एएबीपीआरएफटी) के मुख्य प्रशासक (उप-मंत्री), श्री काय फुशाओ के बीच समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गए।

यह समझौता-ज्ञापन चीनी राष्ट्रपति के भारत दौरे के अवसर पर भारत गणराज्य व चीन जनवादी गणराज्य में परस्पर प्रकाशन व सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा सहयोग को सुदृढ़ करने हेतु दो देशों और उनके लोगों के बीच पारस्परिक मित्रता को बढ़ावा देने के लिए किये गए महत्वपूर्ण 12 समझौतों में से एक है।

फैजाबाद पुस्तक मेला में रा.पु. न्यास को प्रथम पुरस्कार

नारायण दास खत्री मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा 14 से 19 अक्तूबर, 2014 के दौरान फैजाबाद में आयोजित फैजाबाद पुस्तक मेला में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने भी भाग लिया। इस बार के मेले में न्यास द्वारा दो डबल स्टॉल लगाये गए थे। स्टॉल में हिंदी, अँग्रेजी, उर्दू एवं सिंधी की पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं।

पुस्तक मेले का उद्घाटन 14 अक्तूबर को हिंदी लेखकद्वय श्री रवींद्र कालिया एवं श्रीमती ममता कालिया द्वारा किया गया। मेले में 120 स्टॉल लगाये गए थे जिसमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के स्टॉल प्रमुखता से निर्मित किये गए थे। बेहतर साज-सज्जा एवं प्रदर्शन के लिए रा.पु. न्यास को प्रथम पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार प्रख्यात हिंदी लेखिका श्रीमती नासिरा शर्मा द्वारा प्रदान किया गया, जिसे मेले में न्यास के प्रभारी श्री सुरेश कुमार द्वारा ग्रहण किया गया।

रा.पु. न्यास के स्टॉल पर विशेष रूप से सिंधी भाषा में न्यास से प्रकाशित कुछ चुनिंदा पुस्तकों को भी प्रदर्शित किया गया था। सिंधी पुस्तकों के इस विशेष खंड का न्यास के सिंधी सलाहकार समिति के एक सदस्य, श्री ज्ञाप्रटे सरल एवं पुस्तक मेला प्रभारी श्रीमती रीता खत्री द्वारा संयुक्त रूप से उद्घाटन किया गया।

कोटि पुस्तक प्रदर्शनी

कोटि महिला कॉलेज के नौवें दशवार्षिक समारोह के एक भाग के रूप में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 18 से 20 सितंबर, 2014 तक महिला कॉलेज, उस्मानिया विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय एनबीटी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन निजाम कॉलेज, हैदराबाद के प्रधानाचार्य, प्रो. स्वामी द्वारा किया गया।

प्रदर्शनी में प्रख्यात लेखक, प्राध्यापक, विद्वान व विभिन्न विद्यालयों से आए अनेक विद्यार्थी शामिल हुए। प्रदर्शनी के आयोजन में जन संचार विभाग, ओयूसीडब्ल्यू, कोटि का सहयोग भी सराहनीय रहा।

प्रोन्नयन गतिविधियों की शृंखला में ही एनबीटी द्वारा तेलुगु विभाग, ओयूसीडब्ल्यू के सहयोग से पुस्तक समीक्षा पर आधारित एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमें लगभग 39 विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा एनबीटी प्रकाशनों सहित विभिन्न पुस्तकों पर अपनी समीक्षा भी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कवि, आलोचक एवं सदस्य तेलुगु सलाहकार समिति, साहित्य अकादेमी, श्री अम्मांगी वेणुगोपाल व प्रोफेसर, तेलुगु विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय व सदस्य, तेलंगाना उच्च शिक्षा विभाग, प्रो. सूर्या धनंजय उपस्थित थे।

कार्यक्रम का समन्वय न्यास के तेलुगु संपादक एवं कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. पथिपका मोहन द्वारा किया गया।

पुस्तक परिचय

मणिकर्णिका (आत्मकथा)
डॉ. तुलसीराम; पृ. 208 ₹ 300
राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
प्रस्तुत खंड प्रो. (डॉ.) तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' का विस्तार है। 'मुर्दहिया' को आलोचकों का अच्छा प्रतिभाव मिला था। 'मणिकर्णिका' में लेखक के बी.एच.यू. में बिताए जीवन का विवरण है। यह विवरण व्यक्तिगत न होकर एक सामाजिक आख्यान भी बन जाता है जिसमें समकालीन समाज का अक्स दिखता है।

मानव अधिकार और हम
उर्मिला जैन; पृ. 102 ₹ 200
परमेश्वरी प्रकाशन, बी-109, प्रीत विहार, दिल्ली-110092
मानव अधिकार के क्षेत्र में कार्य कर रहे व्यक्ति/संस्था के लिए यह एक उपयोगी पुस्तक है। इसमें मानव अधिकार क्या है, मानव अधिकार संरक्षण, मानव अधिकार और स्त्रियाँ, बच्चे, एमनेस्टी इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स वाच, मानव अधिकार और फिल्में आदि अनेक अध्यायों के माध्यम से मानव अधिकार के विभिन्न पहलुओं की प्रामाणिक जानकारी है।

मनोनयन; *प्रभाकिरण जैन;* पृ. 114 ₹ 180
भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110003
राज्यसभा में मनोनयन की प्रक्रिया के द्वारा साहित्य, कला, विज्ञान, समाज-सेवा आदि अनेक क्षेत्रों की गणमान्य हस्तियों को नामित कर उन्हें सदस्य बनाया जाता है। संसद के उच्च सदन, राज्यसभा के संगठन में मनोनीत सदस्यों की संविधान द्वारा व्यवस्था किया जाना एक महत्वपूर्ण कार्य है। यह पुस्तक इसी विषय पर है।

कैंसर की व्यथा कथा
डॉ. श्रीगोपाल काबरा; पृ. 160 ₹ 300
राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
कैंसर के बारे में आम तौर पर जानकारी कम और भय व भ्रम अधिक है। बेबस रोगियों का इस कारण नाना प्रकार से शोषण होता है। इस पुस्तक में आम बोलचाल की भाषा में कैंसर के बारे में विश्वसनीय जानकारी दी गई है। इससे अनेक भ्रमों का निराकरण हो सकता है।

इच्छाधारी लड़की (कहानी-संग्रह)
डॉ. राजेश श्रीवास्तव
पृ. 92 ₹ नहीं लिखा
शब्द प्रकाशन, 33, मैरिस रोड, अलीगढ़-202001, उ.प्र.
बारह कहानियों का संग्रह। सभी कहानियाँ अपनी अलग-अलग भाव-भूमि में अलग-अलग प्रभाव छोड़ती हैं। कहानी के प्लॉट हमारे आस-पास से ही लिये गए हैं, सो, कहानी हमारी-आपकी ही लगती है। पास-पड़ोस-परिवेश की कहानियों को पढ़कर अपनेपन का भाव आता ही है।

जिंदगी तेरे नाम डार्लिंग (व्यंग्य)
लालित्य ललित; पृ. 96 ₹ 200
हिंदी साहित्य निकेतन, 16, साहित्य विहार, बिजनौर-246701, उ.प्र.
इस संग्रह में कवि सह व्यंग्यकार लालित्य ललित ने शैली के स्तर पर अनेक नए प्रयोग किए हैं। कवि हैं सो व्यंग्य में भी कविताई थोड़ी-बहुत घुसी रहती है। आप निकाल नहीं सकते। वैसे भी, व्यंग्य है—लेखक को प्रयोग करने की छूट है। चलता है! एंवई है! है कि नहीं।

महुआ घटवारिन और अन्य कहानियाँ
पंकज सुबीर; पृ. 176 ₹ 300
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
प्रस्तुत संग्रह को वर्तमान दौर के प्रतिनिधि संग्रह के रूप में कहा गया है। लेखक आज के उपभोक्तावादी दौर में जहाँ बाजार की चालाकियों पर उँगली उठाते हैं वहीं उपभोक्ता के एक विचारहीन शरीर मात्र बन जाने पर दुखी भी हैं। किसानों की आत्महत्या से लेकर अनेक समकालीन सामाजिक सच इनकी कहानियों में जगह पाते हैं।

तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की
अजीत दुबे; पृ. 180 ₹ 400
इंडिका इन्फोमीडिया, 322, जेल रोड, नांगल राया, नई दिल्ली-110058
दुनियाभर के 16 देशों में 20 करोड़ से भी ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा, भोजपुरी आज भी संवैधानिक मान्यता की बाट जोह रही है। भोजपुरी भाषायी संघर्ष को उकेरती इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने इस भाषा के विविध पहलुओं पर अपनी पैनी दृष्टि डाली है।

पुरुषार्थ, त्याग और स्वराज
मो. क. गाँधी, संपा.: डॉ. राजीव रंजन गिरि; पृ. 176 ₹ 50
गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली-110002
गाँधी जी अपनी मृत्यु के 66 वर्षों बाद आज भी प्रासंगिक हैं, साथ ही उनके विचार। इस पुस्तक में विविध विषयों पर गाँधी जी के लेख और/या भाषण संकलित हैं। गाँधी ने कितने विषयों पर कितनी-कितनी बातें कही हैं इसे पढ़कर आश्चर्य होता है। एक पठनीय पुस्तक।

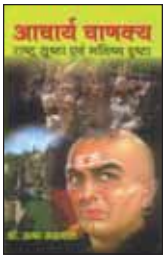

आचार्य चाणक्य : राष्ट्र सृष्टा एवं भविष्य दृष्टा
डॉ. ऊषा अग्रवाल; पृ. 164 ₹ 100
सुलतान चंद द्रौपदी देवी एजूकेशन फाउंडेशन, 23, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
आचार्य चाणक्य भारतीय इतिहास के एक वैसे चरित्र हैं जिनकी राजनीतिक और कूटनीतिक चतुराई का लोहा दुनिया आज भी मानती है। इस पुस्तक में मित्र, शत्रु, धर्म, विद्या, शासन, नेतृत्व आदि विषयों पर उनके गूढ़ विचारों की सरल-सहज प्रस्तुति की गई है।

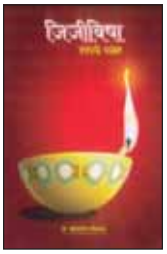

जिजीविषा (कहानी-संग्रह)
डॉ. सुमनलता श्रीवास्तव
पृ. 80 ₹ 150
त्रिवेदी परिषद, जबलपुर द्वारा प्रकाशित
बारह कहानियाँ। हर कहानी का अपना अलग रंग-ढंग है, परिवेश और स्वभाव है। लेकिन सभी कहानियों में जीवन-जगत की बातें हैं, कुछ उपदेश है, संदेश है और चेतावनी भी। परिवार और समाज की ही बातें हैं यहाँ।

क्षितिज की ओर (कहानी-संग्रह)
सीमा व्यास
पृ. 112 ₹ 200
प्रगतिशील प्रकाशन, 16, अंसारी रोड, शांतिमोहन हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
पच्चीस कहानियों का संग्रह। पहला ही कथा संग्रह। महिला और बाल मनोविज्ञान है इस संग्रह में तो गंदी, विद्रूप रूढ़ियों को तोड़ने की जिद भी। अनुभव और भोगे हुए की अभिव्यक्ति भी यहाँ है।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

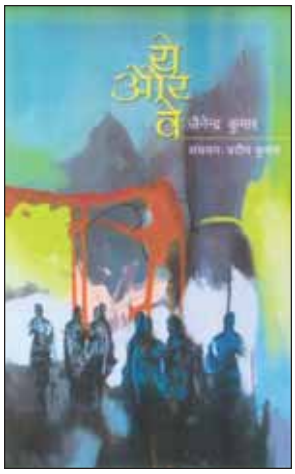

ये और वे

जैनेन्द्र कुमार

संचयन : प्रदीप कुमार

पृ. 312 ₹ 265

उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में जैनेन्द्र कुमार ने नई परंपरा का सूत्रपात कर उसे रूढ़ियों से मुक्त कर नया परिप्रेक्ष्य दिया था। वे न केवल मौलिक व नवीन चिंतक और युग प्रस्तावक हैं जिनके लेखन, मनन और व्यवहार में एक नए समाज, देश और संस्कृति को निभाने की बेचैनी है, बल्कि मानव जाति की मुक्ति का संदेश भी है।

ISBN 978-81-237-7204-2

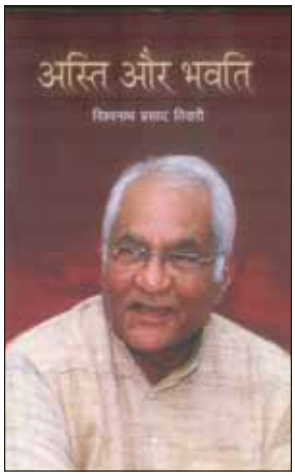

अस्ति और भवति (आत्मकथा)

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

पृ. 434 ₹ 355

जब देश आजाद हुआ तो उनकी बाल्यावस्था थी। जब देश ने प्रगति पथ पर दौड़ना शुरू किया तो उनका साहित्य-सृजन का सफर शुरू हो गया। भारत व साथ-साथ दुनिया में हो रहे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और साहित्यिक परिवर्तनों के वे सहयात्री रहे। उन्होंने इन परिवर्तनों को महज एक दर्शक की तरह नहीं, बल्कि उससे होने वाली आगामी संभावनाओं के आकलनकर्ता के रूप में देखा-समझा। यह पुस्तक प्रख्यात साहित्यकार, संपादक, विचारक, शिक्षक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के कोई पचास से अधिक वर्षों के सार्वजनिक जीवन का आईना है। असल में यह उनके आत्मजीवनचरित से कहीं अधिक उस काल को समझने का सूत्र है। इसमें श्री तिवारी देश की समस्याओं, संकटों, विकास, राजनीतिक टकरावों, लेखकों के विचारों, वैश्वीकरण के दौर में बदले मूल्यों से लेकर घर-परिवार, गाँव-दुनिया से जुड़ी स्मृतियों को जीवंत करते हैं।

ISBN 978-81-237-7216-5

1971 : बांग्लादेश मुक्तियुद्ध की कहानियाँ

संपा. : सलाम आजाद

पृ. 224 ₹ 190

सन् 1971 के नौ महीनों (मार्च-दिसंबर) के जबरदस्त मुक्तियुद्ध में नवनिर्मित बांग्लादेश के लाखों लोग हताहत हुए थे और प्रायः दो लाख से अधिक स्त्रियों को अपनी इज्जत गँवानी पड़ी थी। भारत सरकार और भारतीय सेना को भी इस मुक्तिसंग्राम में पूर्वी पाकिस्तान के स्वतंत्रताकर्मियों के सहयोग की बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। कहना न होगा कि इतने बड़े युद्ध से वहाँ के साहित्यकार भी निर्लिप्त न रह सके और उन्होंने पाकिस्तानी सेना के क्रूर और लोमहर्षक अत्याचारों का अपनी कहानियों में बड़ी शिद्दत और मार्मिकता के साथ वर्णन किया। प्रस्तुत संग्रह बांग्लादेश के 22 कथाकारों की 23 कहानियों का एक ऐसा 'रक्तरंजित' संग्रह है जिसे पढ़कर किसी भी संवेदनशील पाठक की आँखें नम हो जाएँगी।

ISBN 978-81-237-7313-1

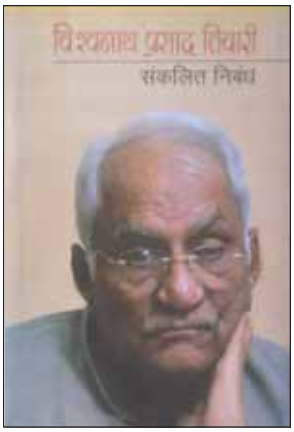

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : संकलित निबंध

पृ. 248 ₹ 225

प्रस्तुत पुस्तक में कवि-आलोचक द्वारा अपने समय, समाज और संसार के समसामयिक घटनाओं पर न केवल एक सजग, सतर्क, सचेतन और जागरूक बल्कि निरपेक्ष एवं समालोचनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में विद्वान लेखक द्वारा न केवल राज्य, धर्म, विचारधारा, साहित्य, स्त्री, कविता आदि पर तर्कपूर्ण, विचारपरक आकलन-विश्लेषण किया गया है, वरन दलित साहित्य, दलित राजनीति, लेखक का रचना दायित्व और सामाजिक दायित्व, राज्यसत्ता और साहित्यकार आदि पर भी विचार किया गया है। कुछ हाल के और कुछ दिक् काल के रचनाकारों की रचनाओं और विचारों पर भी मूर्धन्य आलोचक के समय-समय पर लिखे आलेख इस पुस्तक में शामिल किये गए हैं। इनमें शामिल हैं– प्रेमचंद, रामचंद्र शुक्ल, महादेवी वर्मा, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, फणीश्वरनाथ रेणु, निर्मल वर्मा और मुक्तिबोध। आलेखों में इन लेखकों की रचनाओं पर ही नहीं बल्कि उनके रचनाकार-व्यक्तित्व पर भी सजग लेखक की आलोचनात्मक दृष्टि पड़ी है। लेखक की नजर देश से दूर, सोवियत संघ के पतन पर भी जाती है और वह इस घटना के परिप्रेक्ष्य में मार्क्सवादी चिंतन का भी पोस्टमार्टम करता है। गाँधी की प्रासंगिकता पर भी विचार हुआ है और उनके 'हिंद स्वराज' की उनकी अवधारणा पर नीर-क्षीर विवेक चिंतन भी। प्रगति और विकास की मर्यादा पर भी चिंतक-विचारक लेखक की पत्रकारीय पैनी कलम चली है। छात्रों, प्रोफेसर एवं चिंतनशील सभी बुद्धिजीवियों के लिए एक जरूरी पुस्तक।

ISBN 978-81-237-7230-1

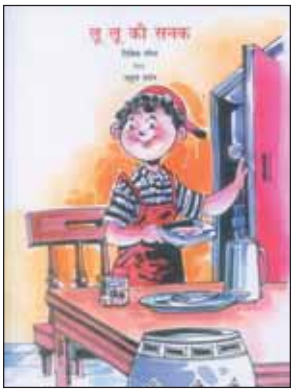

लू लू की सनक

दिविक रमेश

पृ. 52 ₹ 75

नेहरू बाल पुस्तकालय पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक में छह बाल कहानियाँ हैं और हर कहानी का पात्र लू लू है। लू लू अपनी ही तरह का एक अनोखा बच्चा है। उसे बस खेलने में मजा आता है। वह कई हरकतें करता है जिससे उसकी माँ परेशान रहती है। प्रस्तुत पुस्तक में कहानियों का क्रम इस प्रकार है–लू लू की माँ, लू लू की सनक, लू लू बड़ा हो गया, लू लू की बातें, लू लू का गुस्सा एवं लाल बत्ती पर। कहानियाँ रोचक हैं और बच्चों को पढ़ने में आनंददायक और मजेदार लगेंगी।

ISBN 978-81-237-7316-2

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें

अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का सूची-पत्र

मँगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/11/2014

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के
किताब क्लब का सदस्य बनें

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत पाठकों की भाषा, संस्कृति, आयु-वर्ग और रुचियों की विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करता है। इस प्रकार विज्ञान, कला, पर्यावरण तथा कई अन्य विषयों के सूचना-प्रधान साहित्य से लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों के कथा साहित्य और बच्चों के लिए सुंदर ढंग से चित्रित साहित्य तक व्यापक विषयों पर न्यास की पुस्तकें उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकें 32 भारतीय भाषाओं और अँग्रेजी में, उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं। न्यास का लगातार यह प्रयास रहा है कि वह अपने प्राधिकृत पुस्तक विक्रेताओं के एक बेहतर नेटवर्क के अलावा देश के प्रत्येक जिले में किताब क्लब सदस्यों के नामांकन के द्वारा अपनी किताबें पहुँचाए।

न्यास की पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए न्यास 1994 से ही एक किताब क्लब योजना का संचालन कर रहा है। आप भी इस किताब क्लब का सदस्य बनें। विस्तृत विवरण एवं प्रपत्र हेतु कृपया हमारा वेबसाइट देखें : www.nbtindia.gov.in

भाग लें
नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
14 से 22 फरवरी, 2015
अधिक जानकारी के लिए कृपया देखें
www.newdelhiworldbookfair.gov.in

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के आगामी पुस्तक मेले

भोपाल पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	–	अक्तूबर-नवंबर, 2014
रायपुर पुस्तक मेला, छत्तीसगढ़	–	1 से 7 नवंबर, 2014
ईटानगर पुस्तक मेला, अरुणाचल प्रदेश	–	22 से 30 नवंबर, 2014
जम्मू पुस्तक मेला, जम्मू-कश्मीर	–	नवंबर, 2014
इंदौर पुस्तक मेला, मध्य प्रदेश	–	6 से 14 दिसंबर, 2014
कटक पुस्तक मेला, ओडिशा	–	18 से 26 दिसंबर, 2014
जोधपुर/बीकानेर पुस्तक मेला, राजस्थान	–	दिसंबर, 2014
देहरादून पुस्तक मेला, उत्तराखंड	–	दिसंबर, 2014
आइजल पुस्तक मेला, मिजोरम	–	दिसं., 2014 से जन. 2015
राँची पुस्तक मेला, झारखंड	–	मार्च, 2015
पटना पुस्तक मेला, बिहार	–	मार्च, 2015

पुस्तक मेले से संबंधित जानकारी के लिए संपर्क करें :
उप-निदेशक (प्रदर्शनी)
दूरभाष : 011-26707700/26707778

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेल: office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070